बॉम्बे 25/2/1966 शुक्रवार प्रातः क्लास

बाप बच्चों को रोज़–ब–रोज़ बहुत सहज बातें समझाते हैं।...ये पाठशाला तो ज़रूर है और ईश्वरीय पाठशाला। देखो, अच्छे तरीके से समझो (कि) ये है ईश्वरीय पाठशाला। गीता के लिए ऐसे ही कहते हैं कि भगवानुवाच। अभी बच्चों को समझा दिया है कि भगवान, सबका बाप एक है। सभी भगवान नहीं हो सकते हैं। सभी बच्चे हो सकते हैं एक बाप के। ये पक्का–2 याद करो। ये भी ज्ञान कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं है कि बाप एक है और हम सभी जो ब्रदर्स कहते हैं, इनका वो बाप है। तो ज़रूर बुद्धि में आना चाहिए वो बाप है नई दुनिया स्थापन करने वाला, स्वर्ग स्थापन करने वाला। ज़रूर उस बाप से हम भारतवासियों को ही स्वर्ग का वर्सा मिला होगा; क्योंकि भारत में ही जन्म गाया जाता है– शिवजयन्ती वा शिवरात्रि। अभी बाप बैठकर समझाते हैं कि भारत में ही शिव की जयन्ती होती है। जैसे क्राइस्ट की उस तरफ में, बौद्धियों की उस तरफ में, वैसे इस भारत में बाप की जयन्ती होती है, बाबा की ; परन्तु वो बाबा की जयन्ती कैसे होती है सो बाबा ही आ करके समझावें और बाबा आता भी है कल्प के संगमयुगे। क्या करने? बच्चों को फिर से पतित से पावन बनाने अर्थात् फिर से वर्सा देने; क्योंकि इस समय में रावण के श्राप के नीचे हैं। हम दुःखी ही दुःखी हैं और कलहयुग है, पुरानी दुनिया है। अभी हमेशा याद करो (कि) हम जो ब्राह्मण हैं, ब्रह्मा मुखवंशावली, ये हो गई चोटी। सभी अपने में निश्चय रखो। जो भी अपन को ब्रह्माकुमार और कुमारी समझते हैं उनको ज़रूर समझना चाहिए कि हम कल्प–2 डाडे से ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग का वर्सा लेते ही हैं, जो अभी इस समय में ये निशानी ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। प्रजापिता ब्रह्मा के इतने ढेर बच्चे, और कोई के हो नहीं सकते हैं। सो भी कायदेसिर बच्चे। ये आए हुए हैं बाबा। वो हो गया सबका बाप, ब्रह्मा है बच्चा; इसलिए बच्चों को वर्सा मिलता है डाडे से। ये डाडे का वर्सा। ये बाबा का वर्सा नहीं है। वर्सा वो डाडा देते हैं और डाडे का वर्सा है ही सतयुग की बादशाही। ...जबकि वो बाबा है बेहद का और रचता है स्वर्ग का तो हमको ज़रूर स्वर्ग की बादशाही होनी चाहिए; परन्तु वो भूल गए हैं कि हमको स्वर्ग की बादशाही थी। ऐसे नहीं है कि नहीं थी। अच्छा, उस स्वर्ग की बादशाही कैसे दी होगी? ज़रूर ब्रह्मा द्वारा दी होगी और थी। भारत में इनका राज्य था। ये समझो अच्छी तरह से अभी संगम है, कल्प का संगम। संगमयुग पर ब्रह्मा है तब तो ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ कहलाते हैं ना। नहीं तो इतने ब्रह्माकुमार अंधश्रद्धा से तो नहीं कोई के बच्चे बनते हैं ना। आ करके एडॉप्ट होते हैं कि हम ब्रह्माकुमार–कुमारी हैं और ब्रह्मा बाबा शिवबाबा का बच्चा है। हमको शिवबाबा से फिर से स्वर्ग की बादशाही मिल रही है। मिली थी, उसको 5000 वर्ष हुए। हम देवी–देवता थे ज़रूर, देवी–देवता धर्म के थे और पिछाड़ी तक हमको देवी–देवता धर्म का हो रहना है और वृद्धि होती रहनी है। ऐसे ही जैसे क्राइस्ट आया, अभी तलक क्रिश्चियन लोग हैं। वो जानते हैं कि हमको ये धर्म क्राइस्ट से मिला। क्राइस्ट आया, हम क्रिश्चियन बने। अभी तलक भी क्रिश्चियन बने। आज से ये 2000 वर्ष. ..क्राइस्ट आया और हम क्रिश्चियन धर्म वाले वृद्धि को पाते गए। अभी इतने क्रिश्चियन धर्म वाले हो गए हैं। ऐसे कहेंगे ना। अच्छा, ये भी ज़रूर समझना है कि पहले–2 सतोप्रधान में आना होता है, पीछे सतो में, फिर रजो में, फिर तमों में। उसमें तुम पहले नंबर में सतयुग में सतोप्रधान में थे। सतो में आए, फिर रजो में आए, अब तमोप्रधान में हो और बरोबर बाप फिर आया हुआ है यहाँ ; क्योंकि जब तमोप्रधान सृष्टि बनती है तो उनके पास सतोप्रधान सृष्टि ज़रूर आनी है। तमोप्रधान कहा जाता है पुरानी सृष्टि को, सतोप्रधान कहा जाता है नई सृष्टि को। अब ये नई सृष्टि में ऐसे समझो कि बरोबर हम थे; क्योंकि हमारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म है। जैसे क्रिश्चियन लोग अभी तलक भी, बीस सौ वर्ष हुआ, क्रिश्चियन–क्रिश्चियन मल्टीप्लीकेशन हो करके अभी तक क्रिश्चियन हैं। बौद्धी भी बुद्ध धर्म के– चीन–जापानी; परन्तु वो आपस में लड़ मरे हैं; पर हैं बौद्धी धर्म। तो धर्म हैं ही मुख्य चार। पहले नंबर में तुम्हारा धर्म, वो चलता है आधाकल्प। सतयुग और त्रेता में तुम्हारा अलग। पीछे फिर तुम देवताएँ हो, कोई दूसरे

नहीं हो। सिर्फ विकारी बनने के कारण तुम अपन को देवी–देवता नहीं कहलाते हो। हो तुम फिर भी देवी–देवता धर्म से। आदि सनातन देवी–देवता धर्म के अंत तक; परन्तु क्यों तुम अपन को देवी–देवता धर्म के नहीं मानते हो; क्योंकि रावण के होने कारण, वाममार्ग में जाने कारण पतित बन गए हो अर्थात् तुम सो पावन देवी–देवता थे, अब सो पतित देवी–देवता बन गए हो; इसलिए तुम अपन को देवी–देवता नहीं कहते हो, हिन्दू कह देते हो। अभी समझा अच्छी तरह से? मगज में बैठा है बच्चों को? तो अभी तुम सभी जो ब्राह्मण चोटी बने हो, तुमको चोटी से ऊपर तो है निराकारी बाबा, दूसरी चीज़ तो कुछ है नहीं। चोटी, फिर हैं ये देवताएँ। इसको कहा जाता है ब्राह्मण का छोटा युग। अभी तुम देखो ब्राह्मण हो ऊँचे ते ऊँचे। तुम्हारा है ऊँचे ते ऊँचे वर्ण, ब्राह्मण वर्ण। तुम अभी किसके पौत्रे हो? ब्रह्मा के तो बच्चे–बच्चियाँ हो ही। बाप कहते हैं ब्रह्मा से तुमको वर्सा नहीं मिलने का है। ब्रह्मा कोई स्वर्ग की स्थापना नहीं करते हैं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं, जिसके तुम मालिक बन रहे हो और बाप फिर क्या कहते हैं कि मेरे को अब जानने से ; देखो, तुम जाने ना, मनुष्य हो ना। तुम्हारी आत्मा अब परमात्मा को जान गई और जान गई इस सारे चक्र को; क्योंकि बाप कहते हैं तुम मेरे को सिर्फ जानने से मेरे द्वारा तुम इस सारे सृष्टि–चक्र के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान सुन लेंगे; (क्यों)कि वो ज्ञान सिर्फ मेरे पास है। मेरे को ही बच्चे यहाँ जब महिमा करते हैं तो कहते हैं– पतित–पावन, ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर, आनन्द का सागर है बाप। कौन? शिवबाबा। अभी शिवबाबा आ करके वो वर्सा दे रहे हैं। पवित्रता का सागर। सागर क्यों कहा जाता है? वाह! 21 जन्म तुम पवित्र रह चुके हो। पीछे तो तुम पतित बन जाते हो ना। पीछे तो विषय सागर में घुस जाते हो। अभी ज्ञान सागर तुमको पतित से पावन बनाते हैं। युक्ति कौन–सी है? वो आकर समझाते हैं कि पतित से पावन कोई गंगा नदी में या पानी में या सागर में नहीं बन सकते हैं। ये जो गंगा पर जाकर स्नान करते हैं, ये गंगा जो सागर से निकली हुई, वो कोई पतित–पावन नहीं है। वो तो सतयुग.....ये तो है ना और कलहयुग में भी है। इनमें कोई फर्क नहीं। पानी बरसता है, नदियाँ निकलती आती हैं। अभी ऐसे कहना कि पतित–पावनी गंगा या ये पानी ; ये कहते हैं कितनी पत्थरबुद्धियों की मूर्खता है। एक तरफ में कहते हैं कि बाप, जो ज्ञान का सागर है, वही पतित–पावन हो सकता है, जिसके लिए गाया जाता है कि वो सर्व का सद्गति दाता एक राम कहा जाता है। फिर कहते हैं किसकी? ये सब जो भी भक्तिमार्ग वाले हैं वो सभी हैं सीताएँ और वो है एक राम बाप। ये सीताएँ क्यों इनको कहा गया हुआ है? सभी सीताएँ हैं, सारे मनुष्य मात्र। भक्ति है ना, तो जैसे फिमेल भक्ति हो जाती है। देखो भक्ति–ज्ञान, ज्ञान जैसे मेल, भक्ति जैसे फिमेल। तो बाप आकर समझाते हैं...। अभी बाबा बच्चों को ज्ञान दे रहे हैं ना, तो तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। फिर भक्ति बंद। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। सतयुग और त्रेता में भक्ति होती नहीं है। वहाँ ये वेद,ग्रंथ,शास्त्र,तप,जप ये कोई भी चीज़ है नहीं ; क्योंकि तुम अभी इस समय बाप से सदा सुख का वर्सा लेते हो। ऐसे नहीं है कि फिर कोई तुम वहाँ पतित हो, तुमको गंगा में स्नान करना है या भगवान को ढूँढ़ने के लिए तुमको कोई यात्रा करनी है। वहाँ कोई वो यात्रा... यात्रा तुम्हारी ये है एक जो बाप आकर सिखलाते हैं। ये रूहानी यात्रा और कोई भी मनुष्य नहीं सिखलाय सकते। बाप है सभी आत्माओं का बाप। वो हुआ सब आत्माओं का बाप। इसको कहा जाता है रूहानी बाप एक। जिस्मानी बाप तो अनेक हैं। रूहानी बाप है ही एक। ये पक्का–2 करो, घड़ी–2 भूल जाते हैं। रोज़–2 अच्छी तरह से समझाते हैं और उसको याद करते हैं। बाबा आ करके पूछते हैं। और कोई साधु–संत तुम्हारे से नहीं पूछेंगे। देखो, तुम्हारे को कितने बाप हैं? तो मूँझ जाते हैं कि ये क्या प्रश्न पूछते हैं (कि) कितने बाप हैं। ये कोई मूर्ख आदमी है जो पूछते हैं। बाप सबको एक होता है, दो कैसे होगा या तीन कैसे...! ये पूछता है कि कितने बाप हैं, ये तो वण्डर है! तो वो बोलते हैं बाप तो सबका एक होगा ना; परन्तु बाप कहते हैं– वाह! तुम उस बाप को भी याद करते हो, फिर जब कुछ दुःख वगैरह होता है तो– हे भगवन, हे

परमपिता, ओ गॉड फादर! क्यों, तब वो कौन है तुम्हारा? दो नहीं हुआ तुम्हारा? तो उनको समझाया जाता है, एक है लौकिक जिस्मानी बाप, फिर जब कुछ दुःख वगैरह आता है तो तुम उनको याद करते हो और फिर याद भी "तुम मात–पिता"। मात–पिता तो ये भी हैं। .. तुम मात–पिता हम बालक तेरे। तुम्हरी कृपा से हमको सुख घनेरे मिलते हैं। तो इनकी महिमा करते हैं ना। इस हिसाब से कि हमको ये जो लौकिक माँ–बाप हैं ना, शायद उनसे सुख घनेरे नहीं मिलते हैं। ये दुःख है। तो गाया जाता है दुःख में सिमरन करते हैं उस सुख वाले की, सुख में करे न कोय। तो देखो, अभी समझने की बात हुई ना। तो बाबा पूछता है, दूसरा कोई पूछ न सके। बोलता है ना– वाह! तुम भूल गए हो! तुम भक्तिमार्ग में कहते थे कि मात–पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। तुम जब आएँगे तब हम आप एक के ऊपर ही वारी जाएँगे, बलिहारी जाएँगे। मेरे तो फिर ओ बाबा, जब तुम मात–पिता आएँगे तो फिर मैं दूसरे कोई की नहीं बनूँगी; क्योंकि दूसरे जो कोई हैं ना, वो सब दुःख देने वाले हैं। आप ही हमको सुख देने वाले हैं। देखो, भक्तिमार्ग में पुकारते हैं। ये भी ड्रामा में है इनकी पुकार। ये बना हुआ है ड्रामा में। तो बाप आ करके याद दिलाते हैं कि तुम क्या कहते थे कि जब तुम आएँगे तो हम तुम्हारे ही बनेंगे। हम तुम्हारे बनेंगे, तुम हमारे बनेंगे। क्या बनेंगे? शिवबाबा को कहेंगे, हमारे बाबा बनेंगे, आपसे हम वर्सा लेंगे सुख का। अच्छा, बाबा आया हुआ है, ये जानते हो, तब तुम ब्रह्माकुमार और कुमारी कहलाते हो। तो देखो, इतनी पत्थरबुद्धि मनुष्यों की, ये नहीं समझते हैं कि ये ब्रह्माकुमार और कुमारी क्या हैं। सो भी बाबा–2, मम्मा–2 करते रहते हैं। कोई साधु–संत तो हैं नहीं। दूसरे कोई को भी, साधु को भी गुरूजी कहेंगे। कोई भी गुरु किया, बाकी कोई को तो माता–पिता कहेंगे नहीं। ऐसे तो गाँधीजी को भी कहते थे बापूजी, जब(कि) बापूजी था तो नहीं ना। बापू जी से क्या वर्सा मिला? कुछ नहीं। अगर बापू जी से पुरुषार्थ से वर्सा मिला तो जो यहाँ राजाई थी वो खतम हो करके प्रजा का प्रजा पर राज्य हो गया, और ही ग्लानि हो गई; क्योंकि कायदे मुज़ीब बादशाह राजा और रानी राज्य करते थे आदि से। देखो, ये आदि से हैं ना। तो आदि से ही यहाँ भारत में राजा–रानी होते आते हैं। पहले पवित्र, वही फिर अपवित्र बनते हैं। ये जो पूज्य बने, सो फिर पुजारी बनना पड़े। 84 जन्म लेना पड़े ना। तो तुम देखो अभी अपने ऊपर से ख्याल करो; क्योंकि बाबा कहते हैं– मेरे को जानने से मेरे द्वारा तुम सब कुछ जान जाएँगे। सारी सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है तुम सब जान जाएँगे। अच्छा, तुम अभी जान गए अच्छी तरह से कि बरोबर हम आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले तो ज़रूर 84 जन्म लिए। 84 जन्म कैसे लिया ये किसको मालूम नहीं। बाप बैठकर समझाते हैं। तुमको भी समझ जाना चाहिए। पहले–2 क्या था कि कहते हैं कि बेहद का बाप 21 जन्म का वर्सा देते हैं। गाया जाता है कि कुमारी वो जो अपने 21 कुल का उद्धार करे; क्योंकि तुम्हारा कुल है ना जो गिरा हुआ है। तो तुम कुमार और कुमारियाँ...। सब कुमार और कुमारियाँ कहलाती हो। भई, तुम कौन हो? हम ब्रह्माकुमार हैं माना कुमार हैं। वो कहती हैं मैं ब्रह्माकुमारी हूँ। ..कुमारी है। बस हैं ही सभी कुमार और कुमारियाँ। कोई भी गृहस्थी नहीं है, बच्चे और बच्चियाँ हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के इतने बच्चे और बच्चियाँ, इतने ढेर के ढेर और वृद्धि को पाते जाते हैं। ये ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हैं कौन? बाबा कहते हैं ये चोटी है ना, पीछे ये सभी देवता बनने वाले हैं। तो ये है भी यज्ञ, उसमें चाहिए भी ब्राह्मण। यज्ञ किसका है? शिवबाबा का। कौन–सा यज्ञ है? ज्ञान का यज्ञ है। इसको कहा भी जाता है राजस्व यानी स्वराज्य पाने का। आत्मा को अभी बाप से स्वर्ग के वर्से का राज्य मिलता है। अरे भई समझते हो, इसको कहा जाता है– राजस्व अश्वमेध अविनाशी बाप रुद्र का ज्ञान यज्ञ। इनमे क्या कहते हैं? क्या स्वाहा करनी है तुमको? तुमको जो कुछ भी तुम्हारा शरीर सहित है ना, वो सभी बलिहारी जाना है इस यज्ञ में। तो तुम राज्य पाएँगे। बलिहारी जाएँगे शिवबाबा के, जैसे तुम भक्तिमार्ग में कहते थे, सो भी बाप याद दिलाते हैं– तुम भक्तिमार्ग में कहते आए हो– बाबा, जब तुम आएँगे, हम बलिहारी जाएँगे और मेरा तो आप रहेंगे, दूसरा कोई नहीं। अच्छा, बाप बैठकर

समझाते हैं कि तुम मेरा कैसे रह करके और दूसरा कोई नहीं, कैसे समझ सकते हो, तो समझाते हैं। भले तुम बच्चे ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ तो हो गए। ये पवित्रता की तो निशानी हो गई। अभी रहो भी अपने घर में अर्थात् गृहस्थ–व्यवहार में। जबकि अपन को ब्रह्माकुमार–कुमारी समझते हो तो कमल–फूल के समान पवित्र रहना पड़ेगा। ये है ना बरोबर, कमल–फूल के समान रहे फिर तुम अपन को आत्मा तो ज़रूर समझो कि हम उस बाप के बच्चे हैं। सारी दुनिया की आत्माएँ हुईं आशिक और बाप कहते हैं मैं हूँ तुम्हारा माशूक जो आया हूँ। तुम आशिक भक्तिमार्ग में मुझ माशूक को पुकारते रहते थे अच्छी तरह से। भले तुमको और भी मित्र–संबंधी थे, मुझे ज़रूर बुलाते थे। तो अभी मैं आया हुआ हूँ। तुम आधाकल्प के माशूक हो। जब से भक्तिमार्ग में गए हो, याद करते हो जन्म ब जन्म माशूक को, जिसको ही परमपिता परमात्मा कहा जाता है यानी वो भी आत्मा निराकार, वो भी निराकार। वो हुआ बाप। अभी भक्तिमार्ग में तुम लोगों को पार्ट बजाना है ज़रूर दुर्गति में जाने के लिए। जब तलक तुम दुर्गति में न जाओ, मैं आऊँ क्यों, जो तुमको सद्गति में ले जाऊँ! ऐसे कोई मनुष्य है जो कहेगा– भक्तिमार्ग दुर्गति मार्ग है। अभी कहते हैं, समझते कुछ भी नहीं। कहते हैं भक्ति है रात। किसकी? ब्रह्मा की, ब्राह्मणों की। अभी तुम सभी ब्राह्मण हुए ना। तुम ब्राह्मणों की है रात। रात क्यों? कि अंधेरे में ठोकरें खाते हैं। तो बोलते हैं भक्तिमार्ग के अंधेरे होने के कारण ठोकरें खाते हैं बाप को मिलने के लिए, वह मिलता ही नहीं है कुछ भी नहीं। जन्म–जन्मांतर तुम ठोकरें खाते हो द्वापर से ले करके। 21 जन्म प्रालब्ध का पूरा होता है, पीछे चलते हैं रावण राज्य। फिर तुम्हारा दुःख शुरू होता है। शुरू हो–2 करके अभी इस समय में तुम सब महा दुःखी हो गए हो। ऐसे नहीं कि पैसे हैं। ना–2, ये अंत है। कल ये पैसे वाले करोड़ों पति, पद्मपति वो सब अभी मिट्टी में मिल जाने का है। बाबा ने समझाया ना– अभी कोई करोड़पति है और बच्चा पैदा होता है, वो समझते हैं कि ये हमारा जो करोड़ है वो हमारा बच्चा, हमारा ... के नीचे (जो) बच्चा (है) वो बच्चा वा जैसे कोई राजा है, वो समझेंगे राजाई है, हमारा राजा भी राजाई भोगेंगे। अभी तो राजाई है नहीं; परन्तु फिर भी है, साहूकार तो है, दूसरा भोगेगा। बाप कहते हैं– हे बच्चों, हे राजाओं वा रानियों, तुम हैं नहीं, फिर भी तुम जो समझते हो कि हमारे पौत्रे–परपौत्रे खाएँगे, कोई भी नहीं खाएँगे; क्योंकि बाकी दुनिया है ही 8/10 बरस मुश्किल, और भी कम समझो, जास्ती नहीं होगा; क्योंकि ये सभी विघ्न आएगा, अर्थक्वेक होंगे घड़ी–2, ये लड़ पड़ेंगे कभी–2। देखो, पाकिस्तान भी लड़ा ना; परन्तु ये पाकिस्तान लड़े, ये तो बहुत टाइम लग जावे; परन्तु नहीं, ये पिछाड़ी में ऐसे लड़ेंगे आपस में, यहाँ बिल्कुल ही रक्त की नदियाँ बहेंगी। दूसरी जगह में रक्त की नदी नहीं बहेगी। यहाँ रक्त की नदी क्यों बहेगी? कि मुसलमान और हिन्दू ये हैं पुराने दुश्मन और मुसलमान देखो कितने हैं! यहाँ करोड़ों मुसलमान हैं। तो ऐसे फिर वहाँ भी तो हिन्दू हैं, कम हैं, वो बहुत हैं। क्या होगा जब विनाश होगा? वो यहाँ कत्लेआम शुरू करेंगे। वो वहाँ कत्लेआम शुरू हो जाएगा। फिर क्या होगा? रक्त की नदी बहेगी। अच्छा, ये रक्त की नदी जब यहाँ बहती है, किसकी लड़ाई लगती है? कोई पाण्डवों और कौरवों की नहीं लगती है। ये पांडव और यवन हैं, ये कौरव और यवन हैं। तुम्हारी कोई से लड़ाई की बात नहीं है। तुम तो अपने योगबल में रहते हो। लड़ाई का तुम्हारे ऊपर कुछ है ही नहीं और तुम्हारे साथ तुमको कोई ; तुम याद में पूरी रहेंगी तो कुछ भी होगा तो तुम्हारे सामने होगा। कोई तुम्हारे सामने आएगा ना, तो उनको झट कोई न कोई भयंकर साक्षात्कार हो जाएगा, भाग जाएगा। तुमको साक्षात्कार कराया हुआ है कि जंगल में जाती हो, रहती हो, फिर वहाँ कोई दुश्मन, चोर–चकार आते हैं, तो तुम शिवबाबा को पुकारती हो और जैसे कि वो राक्षस है, वो सब देखते हैं, भाग जाते हैं। तुम्हारे आगे कोई विघ्न नहीं आने का है, जो पक्की है एकदम, जो पुरुषार्थ पूरा करती है– मेरा तो एक बाबा, दूसरा न कोई। वो जो है रहते हुए बच्चों को सम्भालते हो; परन्तु फिर भी सम्भालते हुए बाबा कहते हैं कम कार डे यानी कर्म करते रहो, बच्चों को सम्भालते रहो; परन्तु तुम आत्मा अपने बाप को याद करते रहो, जो आया है तुमको

बादशाही देने और फिर बादशाही देंगे तब जबकि उनको याद करते रहेंगे। तो तुम्हारा जो पाप का बोझा है ना ; पतित–पावनी गंगा नहीं है। पतित–पावन तो वो ज्ञान का सागर है ना। तो बोलते हैं मुझे याद करो। अभी देखो, वहाँ तो स्नान करने की बात हुई। यहाँ बच्चों को कहते हैं सिर्फ मुझे याद करते रहो, तो याद से ही तुम्हारे जो विकर्म हैं ना, वो भस्म होते जाएँगे। क्या होंगे? तुम तमोप्रधान से तमो, तमो से सतो, सतो से रजो ; रजो, सतो और सतोप्रधान तुम्हारी आत्मा बन जाएगी। जब तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जाएगी नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार, तो फिर तुम सभी मिल करके ये शरीर छोड़ेंगे एकदम और फिर सभी आत्माओं को बाबा ले जाएँगे मच्छरों के मुआफिक। ये जैसे कि इस दुनिया को घाणे में पीसना है, जैसे वो सरसों पिसती है ना। इनके ऊपर नॉलेज भी है, ये पिसेंगे ऐसे जैसे सरसों पिसती है। ये सब खतम हो जाएँगे। बाकी भारत में जाकर के बहुत थोड़े रहेंगे। बाकी ये सब खलास हो जाएँगे। उसके लिए ये महाभारत की लड़ाई है। अभी ये लड़ाई लड़ने के पहले बाप समझाते हैं कि एक तो वृद्धि तो होती जाएगी ब्राह्मणों की। बहुत वृद्धि होगी। तुम एक नहीं है, बहुत (हैं)। जो ब्राह्मणों से थोड़ा भी सुनते हैं कि बरोबर ये बाबा ही इनको समझाते हैं, जाते हो ना, बहुत समझाते रहते हो, प्रदर्शनी और....क्या बोलते हैं उनको (किसी ने कहा–प्रोजेक्टर), तो उनसे हम बहुत सुनते हैं, ढेर सुनते हैं और वो प्रजा बनती जाती है। बाप ने समझाया ना– राजा और रानी होते हैं एक, बाकी होती है प्रजा। जो वज़ीर होगा सो भी प्रजा की कतार में। वज़ीर भी प्रजा, तो बाकी इतनी ढेर प्रजा होती है एक राजा–रानी की। ...समझो, जैसे कि मैसूर का महाराजा–महारानी हैं। तुम्हें मालूम है उनकी प्रजा कितनी, जब ये राजा थे! लाखों की अंदाज में, करोड़ों की अंदाज में प्रजा होती है। ...तो ये जो राजा–रानी बनना है उनको यहाँ मेहनत भी करनी पड़े ना। कौन–सी मेहनत करनी पड़े? वो बोलते हैं– निरंतर, ये सब कुछ करते हुए तुम मुझे याद करते रहो। तो देखो, जैसे बात करते हैं तुम्हारे से। ऐसे होता है, दो मनुष्य बात करते हैं तो भी उनकी बुद्धि कोई धंधे में लगती है, तो कोई वक्त में कहते हैं– कहाँ बात तुम मेरे से करते हो, तुम्हारी बुद्धि कहाँ दौड़ती है! तो ऐसी युक्ति से तुमको चलना है जो भले हम बैठ करके भोजन बनाते हैं, जैसे आशिक–माशूक होते हैं। आशिक–माशूक भी ऐसे होते हैं, वो जो जिस्मानी लव में आते हैं। वो गंद नहीं करते हैं। तो भी वो उनको याद करेगा ना तो सामने आकर खड़ा हो जाएगा। काम करता रहेगा, सामने आकर खड़ा रहेगा। बस, फिर गुम हो जाते हैं। उनमें भी इतनी ताकत है। तुम बच्चे अभी इस समय में आशिक हो, तुम्हारा माशूक यहाँ आया हुआ है और तुमको बैठ करके पढ़ाते हैं। पढ़ाते भी हैं। बाबा बोलते हैं कि पढ़ाई से तुम बहुत ऊँचा पद पाएँगे, देवता बनेंगे और माशूक को याद करेंगे तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा और सदैव निरोगी बनेंगे। इसलिए कहा जाता है योग, याद से तुम सदा निरोगी बनेंगे, बड़ी आयु जाकर बनेगी और अपने इस 84 जन्म के चक्कर को याद करने से ; और तो उसमें तकलीफ नहीं है ना। सतयुग में इतने थे, द्वापर में इतने थे, कलहयुग में इतने ये सभी। वो तो तुमको समझा दिया कि हम देवी–देवता धर्म के हैं। हम(ने) 84 जन्म का चक्कर पूरा किया है। ऐसे मत समझो तुम थोड़े हो। नहीं, आगे चलकर तुम बहुत वृद्धि को पाएँगे। ये सेंटर्स तो अभी तुम्हारे सौ डेढ़ हैं ना; पर ये हज़ारों की तादाद में हो जाएँगे, बल्कि लाखों की तादाद में। गली–2 में, घर–2 में वो सब यही समझाते रहेंगे– बाबा को याद करो। बरोबर देखते हो विनाश आगे आ गया। बड़े बाबा को याद करो और वर्से को याद करो। बाबा को याद करो और वर्से को याद करो। 84 जन्म अभी पूरा हुआ। अभी चलो घर। यह छी–2 चोला, छी–2 दुनिया। इसको कहते हैं बेहद का वैराग्य। तो देखो, वैराग्य में तो हद के सन्यासी भी जाते हैं। वो तो घर–बार छोड़ देते हैं। ...तुमको बाबा कहते हैं कि वो है हद का वैराग्य सन्यासियों का। वो हठयोगी। वो कोई राजयोग नहीं सिखला सकेंगे। ये उनकी शैतानी है जो कहते हैं कि हम राजयोग सिखला सकते हैं। इसलिए वो समझते हैं गीता में राजयोग है। तो बैठ करके गीता सुनाते हैं। कहते हैं कि हम राजयोग सिखला रहे हैं; परन्तु गीता से पढ़ने से

या सुनने से कभी कोई मनुष्य से देवता बन नहीं सकते हैं। न कोई स्वर्ग का बादशाह बन सकता है। यह भक्तिमार्ग तो में पढ़ते आए हो। बाबा (ने) कहा ना, बाबा (ने) समझाया है ना– ये भी खुद पढ़ता था। ये खुद फिर कहते हैं मैं भी तो गीता पढ़ता था और समझ में आता था कि हम जन्म–जन्मांतर भक्तिमार्ग में ये शास्त्र, वेद सभी पढ़ते आए हैं; क्योंकि परम्परा से कहते हैं ना। अभी ये ज्ञान नहीं था कि परम्परा कब से हम ये वेद,उपनिषद,शास्त्र पढ़ते आए हैं। वो किसको कोई पता नहीं है; क्योंकि वो कह देते हैं कि ये अनादि है। बाप आकर समझाते हैं– नहीं, ये द्वापर से ले करके भक्तिमार्ग शुरू होती है, रावण का राज्य होता है और दुर्गति वहाँ से शुरू होती है। तो देखो... बाबा ने, सीढ़ी चढ़ी ना। अभी तुम....84...कला उतर करके आ करके तमोप्रधान बने हो। ये भारतवासियों की बात करते हैं जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। हैं भी अभी देवी–देवता धर्म के। भले कोई कहते हैं मैं गुजराती, फलाना (हूँ)। देवी–देवता नहीं कहला सकते हैं; क्योंकि पतित हैं। अच्छा, अभी बाप कहते हैं कि देखो, अभी तुम बुद्धि से याद रखो– तुम सो देवी–देवता थे। क्रिश्चियन भी कहेंगे हम सो क्रिश्चियन थे। क्राइस्ट ने स्थापन किया। तुम जानते हो हम भारतवासी सतयुग में थे, ज़रूर बाप ने स्थापन किया था। बरोबर 84 जन्म ले करके अभी तमोप्रधान हो गए हैं। खतम हो गया। लड़ाई सामने खड़ी है। तो बुद्धि में रहना चाहिए कि हम सो ब्राह्मण थे। हम सो ब्राह्मण तो अभी बने हैं ना। इसके पहले तुम देवता थे। तो अभी ब्राह्मण से देवता बन रहे हो। ये भी ब्राह्मण से देवता बने हैं ना। तुम देवता बन रहे हो। अभी ये नहीं है तो नहीं हैं। अभी ये ब्राह्मण हैं..। इसके पहले कौन थे? शूद्र थे। इनसे पहले कौन थे? वैश्य थे। उनसे पहले कौन थे? क्षत्रिय थे। इनसे पहले कौन थे? देवता थे। अभी समझ में आता है बुद्धि में! इतना सहज करके समझाते हैं; क्योंकि दूसरे–2 धर्म में हैं, भले पिछाड़ी में सब आ करके सुनेंगे; क्योंकि ये धर्म भी पीछे आए हैं ना। जैसे क्रिश्चियन का मल्टीप्लीकेशन ; है तो क्रिश्चियन ना। फिर कोई रोमन, कोई कैथोलिक, कोई क्या, कोई क्या। अनेक हैं। इनमें भी अनेक हैं खिटपिटियाँ। देखो, लैंग्वेज़स भी अनेक हैं। पता है क्रिश्चियन में कितनी लैंग्वेज़ेस हैं ? बहुत लैंग्वेज़ेस हैं। जर्मन अलग; है तो सभी वो ना। जर्मनी,रशिया,इंग्लैण्ड,अमेरिका, पुर्तगाल ये जो भी हैं, ये सभी इंगलिश हैं...परंतु भाषा अलग–2..। तुम भारतवासी भी सब हो भारतवासी। जुदा–2 होने से तुम्हारी लैंग्वेज़ेस भी बदल गई हैं। नहीं तो तुम्हारी सतयुग में एक राजा–रानी, एक लैंग्वेज़ थी, सबकी एक भाषा थी। वो कौन–सी थी? वो ये बच्चे साक्षात्कार करके आए हैं। वो लिखा हुआ है इन लोगों के पास कि वहाँ लैंग्वेज़ यह थी, संस्कृत नहीं थी। हरेक राजा की अपनी लैंग्वेज़ रहती है। तो अभी समझते हो ना– मल्टीप्लीकेशन हो जाने के कारण तुम बहुत किस्म–2 के, भाषाएँ किस्म–(2 की)। हो सभी आदि सनातन देवी–(देवता धर्म के) ; क्योंकि भारतवासी हो। तो अभी बाप आ करके समझाते हैं, इसको अभी कहते हैं कि मैं हूँ तुम्हारा माशूक, तुम आत्माएँ हो आशिक और मैं तुम बच्चों को बैठ करके पढ़ाता हूँ। समझते हो ना! ये सब कुछ जान लिया। तुम आत्माओं ने ही 84 जन्म लिया बरोबर। वो जो देह–अभिमान है कि हम(को) 84 जन्म भोगना पड़ता है। 'हम' का कोई पता नहीं (कि) कैसे। 84 का चक्कर तो है ना। भोगती है सब आत्मा। बाप जो समझाते हैं और ये मुर्दे लोग, ये गुरू लोग जो समझाते हैं आत्मा निर्लेप है वा कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। अरे नहीं, सर्वव्यापी तो आत्मा है ना, तुम कहते हो ना अपन को (कि) हम सभी भाई–2 हैं, ब्रदरहुड हैं। पीछे तुम कैसे कह सकेंगे कि हमारे में परमात्मा विराजमान है! तब तो तुम सभी फादर्स हो गए। तो बाप बोलते हैं ये विद्वान,आचार्य,पण्डित इतने पत्थर बुद्धि हो पड़े हैं। ये बाप समझाते हैं ; क्योंकि ये समझते हैं ये आगे भी पत्थरबुद्धि था। बहुत गुरुओं को मानते थे। ये सब मानते थे। ये रामायण भी सुनाते थे कि सीता चुराई गई थी तो हम सत मानते थे। कुछ भी होते तो सत मानते थे। अभी जो सत बोलने वाला...है वो आ करके सच–2 बताते हैं। ये सब वेद,ग्रंथ,उपनिषद,शास्त्र जो तुमने सुना, सब झूठ तो मिरई झूठ; क्योंकि सच तो एक मैं हूँ ना। मुझे ही तुम लोग सत्य कहते हो। मैं सत्य हूँ

और सत्यनारायण की कथा सुनाता हूँ नर से नारायण बनने की और तुम यहाँ बैठे हो बरोबर हम वा नर से नारी या नारी से लक्ष्मी, पीछे जो बनेगा, बन रहे हैं। अच्छा, वो झूठे ब्राह्मण तुमको तीजरी की झूठी आखानी सुनाते थे। अभी हम तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र दे रहे हैं। कौन–सा नेत्र दे रहे हैं? तुम सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जान चुके हो। अच्छा, फिर अमरकथा सुनाई। ये कहते हैं किसको अमरकथा यहाँ नहीं सुनाते हैं? वो अमरकथा जो पार्वती को शंकर ने सुनाई। अभी वो बात भी झूठ। न पार्वती थी, न शंकर था और न कोई ये पहाड़ पर, जहाँ जाते हैं अमरनाथ में, था। वहाँ कथा–वथा सुनाई नहीं। ये सब भक्तिमार्ग का पेशगीर है बहुत धक्का खाने का और है सब झूठ। शंकर, पार्वती को क्या कथा सुनाएँगे? उनको तो ज्ञान का सागर कहा ही नहीं जाता है। कभी कहा है शंकर को ज्ञान का सागर, जो पार्वती को सुनावे! नहीं। शंकर तो है ही ; उनका काम ही है आँख खोलना या प्रेरणा करना, सब विनाश। अब कथा काहे की सुनेंगे? अभी ये भी सब झूठ। अमरकथा सुनाई ही नहीं थी बैठ करके। भक्तिमार्ग का बड़ा भारी पेशगीर बनाया। बच्चियाँ, तुम अमरकथा सुन रही हो अमर बनने के लिए। तुम सतयुग में मृत्यु नहीं पाती हो, जैसे यहाँ अकाले मर जाते हैं। तुम खुशी से अपना शरीर छोड़ा, दूसरा जाकर बचपन का लिया और शादमाना हो जाता है। वहाँ शरीर छोड़कर खुद बच्चा लेते हैं ना, तो शादमाना हो जाता है; क्योंकि एक शरीर तो छोड़ते हैं ; यहाँ कोई शरीर छोड़ते हैं तो रोते–पीटते हैं ना। वहाँ बीमारी तो होती नहीं है बिल्कुल। बाबा ने समझाया ना– याद से तुम सदैव हेल्दी रहते हो, तुम्हारी आयु बड़ी होती है वहाँ। है ना। जब पवित्र हैं तो भारत की आयु देखो कितनी बड़ी थी। अभी पतित हैं तो एवरेज आयु 35। वहाँ एवरेज सवा सौ ; क्योंकि वहाँ पतितपना नहीं था, रावण का राज्य नहीं था। अभी तुम अपन को यह पक्का–2 समझो कि हम भारतवासियों ने 84 का चक्कर पूरा किया। अभी हमको फिर वापस जाना है। बाबा आया हुआ है लेने के लिए; परन्तु कहते हैं तुम्हारी आत्मा पतित है, तुमको पावन की युक्ति बताता हूँ। मन्मनाभव, मुझे याद करो और वर्से को याद करो। मैं(ने) 5000 वर्ष पहले भी यही सुनाया था जिसकी इन्होंने झूठी गीता जाकर बना दी है ; क्योंकि ये मैं ज्ञान सुनाता हूँ, ज्ञान गुम हो जाता है बस। फिर मुझे ही आकर तुमको पतित से पावन बनाना पड़े। और कोई उपाय पीछे ; क्योंकि पावन से तुम पीछे आहिस्ते–2 , देखो 16 कला, पीछे त्रेता में 14 कला। देखो, दो कला कम हो गई। पीछे द्वापर में और 4 कला। कलहयुग में और सब कलाएँ। अभी तुम्हारे में ...कला नहीं है और कहते हैं कि मैं निर्गुण हारे में को गुण नाहीं, आपे ही तरस परोई। उसको कहा जाता है ब्लिसफुल यानी अच्छा और कहते हैं कि दुःख हर्ता, दुःख से छुड़ाय सुख में ले जाते हैं। अंग्रेजी में भी कहते हैं कि लिबरेटर, लिबरेट करके अपने साथ ले जाते हैं। तुम्हारा गुरू कोई जाते हैं तो तुमको थोड़े ही जाते हैं। गुरू जाकर, फिर बोलते हैं– अच्छा, हमारा बच्चा .... फिर उनका बैठ करके...। अगर चेला दो/चार में गड़बड़ हो गई तो वो अलग–2 हो जाते हैं। पीछे जिसको–2 गुरू करना है वो जाकर करे। झगड़ा भी होता है ना। मैं बताऊँ बहुत ही ऐसे झगड़े होते हैं। अभी शंकराचार्य, अभी चार। और भी कुछ जास्ती होंगे तो नियम नहीं है; क्योंकि ये गुरू के चेले फिर आपस में लड़ मरते हैं। फिर चार–2, तीन–2 हो जाते हैं। तुमको मालूम है ना, देखो वो चिदाकाशी था। आजकल चिदाकाशी के बहुत हैं। हेमराज था। उनका एक शिष्य था। बच्चे भी थे। शिष्य भी था रसोईवाला, वो रसोई करता था। उसने अच्छी तरह से नॉलेज ले ली। उनके ऊपर वो राज़ी हो गया। बच्चों के ऊपर राज़ी नहीं हुआ। उन्होंने अच्छी नॉलेज नहीं ली। गद्दी पर उसको बिठा दिया। फिर वो बच्चे क्या करें। तो फुट गए। किसने कहाँ बनाया अपना सतसंग, किसने कहाँ बनाया। देखो कितने हो गए। अभी किसको गुरू करें। फिर जिसको जो पसन्द आया सो जाकर गुरू किया। ऐसे हाल है ना। सबका ही ऐसे हाल है। तो बाप क्या कहते हैं, मैं तुम सब बच्चों को साथ में ले जाऊँगा। भले तुम सम्पूर्ण न बने हुए होंगे तो सज़ा खाएँगे। कयामत के समय सज़ा खाएँगे। सज़ा खाएँगे तो पदभ्रष्ट होगा। अगर पास विथ ऑनर हो गए तो विजयमाला के दाने बनेंगे। अब बादशाही यहाँ

अभी ऐसे स्थापन हो रही है। बादशाही सतयुग में तो नहीं स्थापन होगी। नहीं तो तुम पढ़ते हो भविष्य 21 जन्म का राजभाग पाने के लिए। वो भी जानते हो कि हम 21 जन्म राजभाग पा करके फिर हम गिरेंगे और फिर ऐसे ही आ करके बनेंगे। अभी बुद्धि में बैठी 84 जन्मों की कहानी। उनके साथ सब आ जाते हैं। तो देखो नॉलेजफुल, ज्ञान के सागर (के) बच्चे तुम बन जाते हो अब मास्टर ज्ञान सागर। तुमको सारा मालूम है। ये परमात्मा मनुष्य किसको कहते हैं, कुछ पता नहीं है, कोई एक भी नहीं जानते हैं। कोई को मालूम होगा? देखो जाते हैं, लिंग की पूजा करते हैं। अभी लिंग इतना तो है नहीं। न इतना है, न इतना है। वो कोई बड़ा–छोटा होता है क्या? कहाँ देखो तो इतना बनाते हैं, कितना इतना, कितना इतना, अभी ऐसा कोई होता है क्या! आत्मा छोटी–बड़ी होती ही नहीं। आत्मा और परमात्मा बाप समझाते हैं जैसे तुम हो बिन्दी, मैं भी हूँ बिन्दी। मुझे कहते हो परम आत्मा यानी परमात्मा; क्योंकि याद करते हो। वो तुमको सुख देते हैं; पर है वो भी आत्मा और वो भी बिन्दी है। अभी उनकी पूजा कैसे करें भक्तिमार्ग में? तो भक्तिमार्ग में उसने बड़ा–2 चीज़ बनाया, नहीं तो पत्र और फूल इस पिंडी को चढ़े कैसे ? समझा ना। तो है किसको पता? कोई साधु–संत थोड़े ही जानते हैं कि आत्मा का रूप क्या है, परमात्मा का रूप क्या है। आत्मा भी कहते हैं स्टार। यूँ तो जब रुद्र पूजा करते हैं तभी शिव का लिंग मिट्टी का बड़ा बनाते हैं, उनका छोटा या अंगुष्ठे मिसल बनाते हैं। उससे बड़ा नहीं बनाते हैं; पर अंगुष्ठे मिसल है तो नहीं ना। नहीं तो भला बिन्दी होवे तो बनाए क्या! ये पिंडी कोई पूजा हो सकती है? तो बाप बैठकर समझाते हैं कि तुम कहते भी हो कि आत्मा है ही स्टार भृकुटी के बीच में जो कोई देख भी नहीं सकते हैं, जब निकलता है या प्रवेश करता है। उन सालिग्रामों की फिर पूजा कैसे हो सके? वैसे ही फिर बाप की पूजा भी कैसे हो सके, वो भी बिन्दी! वो कोई बड़ा–2 नहीं है। ये जो लिखा है शास्त्रों में हज़ार सूर्य से प्रकाशमय अर्जुन को दिखलाया, फलाना किया। बोला– बस करो, हम सहन नहीं कर सकते। तो वो परमात्मा की उल्टी बड़ाई कर दी है फालतू। है कुछ भी नहीं। ...जो तुमको सुनाते हैं, क्या है? तो बैठ करके तुमको नॉलेज सुनाते हैं। कहते हैं मैं आता हूँ तुम बच्चों को ये सारी सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है वो समझाने के लिए। जैसे कोई आते हैं, ब्राह्मण खिलाते हैं उनके बाप का कोई भी हो। चलो, या ये शास्त्री मर गया, खिलाएँगे तो ब्राह्मण को ना। उनका तो इतना ऊँचा पद नहीं है ना। तो शास्त्री की सोल ये कोई चरिये–खरिये ब्राह्मण में आएगी ना। वो गरीब लोग होते हैं ना। वो तो चलते ही हैं कोई श्राद्ध वगैरह से। तो क्या उनकी आत्मा, नाम तो देखो कितना बड़ा है, वो आएगी ब्राह्मण में, आएगी भी ज़रूर, आती थी, वो बोल भी सकते हैं। परन्तु क्या? कोई पूछेंगे– तुम कुछ लिखकर गए, फलाना करके गए? तो पितृ बुलाते थे। ये भी ड्रामा में नूँध है। ऐसे नहीं कि शास्त्री (ने) जहाँ जन्म लिया वहाँ से उसकी आत्मा निकल करके कोई दूसरे में आई। नहीं। ये भी ड्रामा में है कि ऐसे ब्राह्मण खिलाया जाता है और वो बोल सकते हैं। बाकी वो कोई उसमें आते नहीं हैं। ये ड्रामा में एक नूँध है जो उनको बुलाना और कहना। ये बाबा बैठ करके सभी की वो मनोकामना पूर्ण करते हैं अल्पकाल क्षणभंगुर। तो समझते हैं कि बाबा शायद सर्वव्यापी है। ये भी समझाते हैं कोई आत्मा शरीर छोड़ करके आ नहीं सकती है। उनकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए सब कुछ मैं करता हूँ। उनको साक्षात्कार जैसे कि हो जाए। बाकी है कुछ भी नहीं। ये करते–2 क्या होता है? अभी यहाँ बाप खुद भी बोलते हैं, मैं तो अभोक्ता हूँ। मुझे क्या पार्ट मिला हुआ है, आ करके बच्चों को ये नॉलेज सुनाना और फिर मनुष्य से देवता बनाना। मेरा ये धर्म है। सो मैं तुम सबका बाबा भी हूँ निराकार। अच्छा, फिर बाबा भी हूँ, टीचर भी हूँ। तुमको सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का राज़ समझाता हूँ, बेहद की हिस्ट्री और जॉग्राफी। बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी, वो मूलवतन, सूक्ष्मवतन, फिर ये स्थूलवतन, उनकी हिस्ट्री–जॉग्राफी कोई जानता नहीं है। मैं जानता हूँ; क्योंकि मैं मनुष्य–सृष्टि का बीज–रूप हूँ। अच्छा, तो टीचर भी हुआ, बाबा भी हुआ। देखो, ये सब कहते हैं हम शिवबाबा के पौत्रे–पौत्री हैं। शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो विनाश करो। ब्रह्मा को

याद करेंगी तो एक भी पाप भस्म नहीं होगा। किसको भी याद करेंगी तो एक भी पाप तुम्हारा कटेगा नहीं। गंगा में डूब मरो, सारी आयु जाकर पड़ जाओ, एक भी पाप तुम्हारा कटेगा नहीं। कैसे कटेगा? सबका कटने का है ना। तो सबका सद्गति दाता राम। वो बोलते हैं सिर्फ माम् एकम् याद करो, दूसरा कोई नहीं। रहो भी गृहस्थ–व्यवहार में, कम कार डे; पर दिल उस आशिक में। अभी आशिक–माशूक भी नंबरवार होते हैं। जो बिल्कुल अच्छे आशिक–माशूक होते हैं उनका बहुत नाम निकलता है। तो तुम भी आशिक, माशूक के साथ इतना लव हो जो फिर ये बनो, नाम भी बने। बहुत मेहनत का काम है, और कोई तकलीफ तो नहीं है ना। बाप आकर कहते हैं– हे आत्माओं! इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान। सुप्रीम रूह शिवबाबा निराकार अपने आत्मा सालिग्रामों को पढ़ाते हैं एक ही बार। ...और कोई पढ़ा नहीं सकते हैं। ड्रामा में कोई का कायदा नहीं है। न मैं कोई दूसरे तन में आ सकता हूँ। आता भी उसमें हूँ जो पहले ये था, 84 जन्म के बाद एकदम पतित बन गया है, बिल्कुल वर्थ नॉट ए पेनी। फिर मैं बैठकर पाउंड, तत् त्वम्। जो–2 बाप को अच्छी तरह से याद करेगा ; ये गुरु–गोसाईं तो पतित हैं ना। मैंने कहा है ना ये साधु जिनका नाम है, उनका भी मुझे परित्रायण करना है यानी उद्धार करना है। वो भला किसका उद्धार करेंगे! समझाते हैं ना। इसलिए ये भक्तिमार्ग के गुरू हैं। ये है ज्ञान का सूर्य। अभी क्या भक्ति उस गुरुओं से सुनना है या इस बेहद के बाप, टीचर और गुरू ? ऐसे कभी होता है क्या! बाप अलग होता है, टीचर फिर पढ़ाते हैं, फिर गुरू का जाकर संग करते हैं। यह बाबा (बोलते) हैं मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, पतित–पावन कहते हो ना, तो गुरू भी हूँ, ज्ञान का सागर हूँ, पतित–पावन भी हूँ। तो तुम्हारा रूहानी बाप भी हूँ और तुम्हारा टीचर भी हूँ। तुमको सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत की नॉलेज सुनाता हूँ और सुनाता ही रहता हूँ, जब तुम योगबल से परिपक्व अवस्था में आ जाएँगे, जब यहाँ ये सारी फूलों की (यानी) देवताओं की बादशाही स्थापन हो जाएगी; क्योंकि फिर भविष्य में जाकर देवता बनेंगे। तो देखो, ये भी संगम पर पढ़े थे। अभी तुम ये आकर बने हो। तो फिर जब बन जाएँगे तो ड्रामा अनुसार जब तुम कर्मातीत अवस्था को पाएँगे तो लड़ाई भी पूरी लग जाएगी फाइनल। बीच में गिटपिट होती रहेगी। तुम समझते रहेंगे कि ये बॉम्ब्स, अरे देखो तो सही, इनकी दुश्मनी पड़ी, एक बॉम्ब छोड़ा चलो खतम कर दिया। अच्छा, कोई ने आ करके बीच में एकदम, पोप आया, समझो अपने सबको ले करके आकर उनको बोला– अभी नहीं मारो, बंद करो एकदम। मानते तो हैं ना कि इसको बंद कर देंगे। दिखला देंगे कि क्या होता है बॉम्ब से। देखा भी है तुम(ने) जब अमेरिका ने जापान के ऊपर छोड़ा था। तुम जानते हो ना, उनके पास दो बॉम्ब्स थे। तीसरा नहीं था। दो बॉम्ब्स भी चरिये–खरिये समय के थे....। पीछे क्या हाल हुआ बताओ! अभी तो बॉम्ब्स देखो कितने ढेर हैं और अभी कहते कि हम वहाँ घर बैठे ठोकेंगे तो ये खतम होंगे। मौत तो सामने खड़ा है ना और हम कहते हैं– किनकी दबी रहेगी धूल में, किनकी राजा खाय, किनकी चोर हरि भजन, किनकी सारे बा, सफली थींदी साय जो खर्चे नाम धनी के। क्या? कि धनी। धनी को तो नहीं देना है ना। तो धनी कहे कि बच्चे, सेन्टर्स खोलते जाओ। ये हॉस्पिटल और यूनिवर्सिटी खोलते जाओ तो बहुतों का कल्याण हो जावे। ये शिवबाबा तो दाता है ना। उनको तो कोई बैठ करके यहाँ महल बनाने का नहीं है। वो कोई मनुष्य तो नहीं है ना। बोलता है मैं डायरेक्शन देता हूँ, जो कुछ भी करो, अगर तुम लोगों को पैसा है तो ये हॉल बनाओ, जिसमें ये आ करके मनुष्यों को अंधो की लाठी बनकर रास्ता बतावे। ...तुम्हारे एक तीन पैर पृथ्वी में यूनिवर्सिटी और हॉस्पिटल, सो भी अविनाशी, जिससे मनुष्य हैल्थ एण्ड वैल्थ फोर एवर ले सकते हैं। तो बच्चियाँ, घर है तुम्हारे पास? हाँ बाबा है, एक कमरा दे सकते हैं। अच्छा बच्ची, वहाँ लिख दो कि जिसको 21 जन्म के लिए एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनना है ना, आ करके समझो। बस। ये हो गई बड़े ते बड़ी हॉस्पिटल और यूनिवर्सिटी। जिसके पास जास्ती पैसा हो तो...बड़ा हॉल दे दे। जिसके पास जास्ती हो तो अच्छा किराये में ले लो। बाबा कहते हैं, चलो, ये मेरे भारत का वो हॉल है, 40 रुपये में देते हैं

या कुछ भी, जहाँगीर हॉल है, 40 रुपया रोज़ लेते हैं। तुम 40 रुपया रोज़ के लिए, तुम ले लो सदैव के लिए, कल तुमको बोलते हैं। चलो, वहाँ भाषण करते जाओ। वहाँ अच्छी तरह से समझाते रहो, आ करके समझो कि तुमको बाप से 21 जन्म का वर्सा कैसे मिल रहा है वा तुम एवर हेल्दी, एवर वेल्दी फॉर 21 जनरेशन कैसे बन सकते हो, आकर समझो। बस, रोज़ भाषण। रोज़ ... निकालते रहो। गवर्मेन्ट बैठी है, खर्चा देते रहे। खर्चा तो इसमें कुछ है नहीं। कोई खर्चा थोड़े ही है। अच्छा, जहाँगीर हॉल 1200 रुपया हुआ महीने का। कोई बड़ी बात थोड़े ही है। देखो, 1700 रुपये तो 1800 रुपये में इनकी किराया। अभी ये देखो किराया है, अभी इनमें कितने नए–2 आते हैं, कितने अपना भाग्य बनाते रहते हैं बाप से वर्सा लेने का। तो देखो, किराये में तो लिया, कितने का कल्याण होता है, कितने परिपक्व अवस्था में आते हैं। ऐसे मत समझो ये मकान है। ये है बड़े ते बड़ी हॉस्पिटल, बड़े ते बड़ी यूनिवर्सिटी, जिससे ये अपने बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हैं। खर्चा क्या है! वो हॉस्पिटल तो दूसरी चीज़ है ना। ये देखो कितनी हैं! बहुत हैं बच्चे। घर में कोठरी छोड़ करके सुबह को लिख देते हैं, फिर वो घर में बैठ जाते हैं। रात को भी आते हैं, उनको समझा करके फिर घर... ऐसे बहुत हैं, ढेर हैं। यहाँ तुम्हारे बॉम्बे में भी है और दिल्ली में भी है। सब जगह में आजकल ऐसे भी करते रहते हैं। अच्छा, कोई हमारे मित्र–संबंधी... उनको समझावें, उनका कल्याण हो जाएगा। बाप का परिचय देना है उनको अच्छी तरह से। दो बाप हैं ना। वो बेहद का, वो हद का। चलो, अभी बाप बोलते हैं मुझे याद करो तो तुम सदैव स्वर्ग का मालिक बनेंगे। बच्चे कितना करते (हैं), अगर हिसाब निकालेंगे तो बहुत हैं। बस और तो बाबा कुछ करते नहीं हैं, कोई भी तकलीफ। बाकी यहाँ पवित्र रहना पड़ेगा। मार है पवित्रता की। सभी दुःशासन और द्रोपदियाँ हैं। सारी दुनिया में एक नहीं थी, सब। अभी पुकारती हैं– बाबा, हम पवित्र रहना चाहती हैं, ये मुआ दुःशासन हमको पवित्र रहने नहीं देते हैं। ऐसी पुकारें बाबा के पास हज़ारों आती हैं। बाबा अभी क्या करें! कल्प पहले भी ये विघ्न थे। ये तुम अबलाओं के ऊपर मार पड़ेगी। ये पाप का घड़ा भरेगा। जब इस भारत में पूरा भर जाएगा ना तब ये विनाश शुरू हो जाएगा। महाभारत की लड़ाई के बाद स्वर्ग के दरवाजे खुले थे। तो वो बोलते हैं– नहीं, लड़ाई न लगे और तुम कहते हो– लड़ाई लगे–2, बिल्कुल जल्दी लगे तो अच्छा है। क्यों? इस ज्ञान यज्ञ से ये ज्वाला कल्प पहले भी प्रज्ज्वलित हुई थी। नहीं तो कहाँ आकर राज्य करेंगे? इस छी–2 दुनिया पर थोड़े ही राज्य करेंगे। नहीं। ये सब खतम हो जाएँगे। अच्छा, शायद घण्टी भी बज गई है। .....दुर्गति को पाए हुए भगत इसको कहा जाता है। भोग लगाते हैं ना। शिवबाबा कहते हैं मेरा ये शरीर थोड़े ही है। (किसी ने कहा– नहीं, निराकार को) ये पुराने मेरे रथ को, पतित एकदम, उनको लगाकर क्या करेंगी! (किसी ने कहा– शिवबाबा को)। शिवबाबा को क्या लगाएँगी? बिन्दी है। तुमने कुछ समझा थोड़े ही। भई, इस बिन्दी को इत्र कैसे लगाएँगे? ...भगत है। कुछ समझा ही नहीं बिल्कुल। इसका क्या नतीजा होगा? ये स्वर्ग की तो स्थापना हो रही है राजा–रानियों का। अभी ये बहुत साधारण गरीब प्रजा होती है ना, या फिर गरीब प्रजा में बनेगी। हम अभी बताते हैं (किसी ने कहा– ऐसा नहीं बोलो, मैं सच–2 आपकी हूँ) ...

मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति याद–प्यार। तुम गंगेश्वरानन्द की हो।